(क) सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता करता है। प्राचीन समाज और जीवन अत्यन्त ही सरल था। अतः उस समय सामाजिक समस्याओं की प्रकृति भी अधिक जटिल न थी। विज्ञान और प्रौद्योगिकीय (Technological) प्रगति के साथ-साथ आधुनिक समाज उत्तरोत्तर जटिल होता जा रहा है और उसके साथ-साथ सामाजिक जीवन और उससे सम्बद्ध समस्याएँ भी उतनी ही जटिल होती जा रही हैं। इन्हें सुलझाने के लिए इनके सम्बन्ध में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है और यह ज्ञान हमें सामाजिक शोध से सरलतापूर्वक प्राप्त होता है।

(ख) सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान, सामाजिक तनाव (Social tensions) को दूर करके, सामाजिक संगठन को बनाए रखने में मदद कर सकता है। अनेक बार सामाजिक घटना या तथ्यों के सम्बन्ध में हमारी गलत धारणाएँ सामाजिक तनाव को जन्म देती है। उदाहरणार्थ, जाति, राष्ट्र, विवाह, सन्तान आदि के सम्बन्ध में भी अनेक गलत

Created By Sign Doc

धारणाएँ प्रचलित हैं। इनको दूर किए बिना सामाजिक जीवन को प्रगतिशील बनाना कदापि सम्भव नहीं है। सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान सामाजिक जीवन में जड़ पकड़ हुए अनेक अन्धविश्वासों तथा गलत धारणाओं को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

(ग) सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान सामाजिक योजनाओं को बनाने में मदद कर सकता है। सामाजिक योजनाएँ समाज को पुनर्जीवित करती हैं और उसमें महत्वपूर्ण और युगोचित परिवर्तन लाती हैं। पर सामाजिक योजनाओं की सफलता दो बातों पर निर्भर करती है— प्रथम तो यह कि योजना को कितने प्रभावपूर्ण व व्यावहारिक ढंग से बनाया गया है और द्वितीय यह कि उस योजना को क्रियान्वित करने में जनसहयोग (Public cooperation) किस सीमा तक प्राप्त हो सकता है। इन दोनों बातों के लिए सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान उपयोगी सिद्ध होता है। सामाजिक शोध हमें विभिन्न सामाजिक घटनाओं में अन्तर्निहित नियमों से परिचित करवाता है और सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों व समस्याओं की कारण सहित व्याख्या प्रस्तुत करता है।

(घ) सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान सामाजिक नियन्त्रण में सहायक सिद्ध हो सकता है। यह मानी हुई बात है कि घटना-विशेष पर हमारा नियन्त्रण उतना ही अधिक होगा जितना कि उस घटना के विषय में हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा। उदाहरणार्थ, दहेज लेने या देने की बुरी प्रथा को एक सामाजिक अधिनियम (Social

Created By Sign Doc

legislation) पारित करके हम उसी अवस्था में रोक सकते हैं जबकि हमें उस प्रथा से सम्बद्ध अन्य परिस्थितियों व कारणों का सही ज्ञान हो । इस प्रकार का निर्णयात्मक ज्ञान हमें सामाजिक शोध से ही प्राप्त हो सकता है ।

इस सम्बन्ध में यह स्पष्टतया स्मरणीय है कि सामाजिक शोधकर्ता (social researcher) का कोई भी सम्बन्ध सामाजिक शोध से प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप देने से नहीं होता है । सामाजिक शोध का कार्य व उद्देश्य तो केवल ज्ञान की प्राप्ति; उसका विस्तार व पुनःपरीक्षा है । श्रीमती यंग (Young) ने लिखा है, "सामाजिक शोध का प्राथमिक उद्देश्य - चाहे वह तात्कालिक हो या दूर का - सामाजिक जीवन को समझना और तदुपरान्त उस पर अधिक नियन्त्रण प्राप्त करना है ।" इसी को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि सामाजिक शोध सामाजिक जीवन का अध्ययन, विश्लेषण व प्रत्यक्षीकरण करने की एक पद्धति है जिससे कि ज्ञान का विस्तार, शुद्धिकरण या पुनःपरीक्षा हो सके; चाहे वह ज्ञान एक सिद्धान्त के निर्माण में या एक कला को व्यवहार में लाने के काम में सहायक हो ।"

उद्देश्यों के सन्दर्भ में सामाजिक की स्थिति का और अधिक स्पष्टीकरण करते हुए श्रीमती यंग ने लिखा है कि "सामाजिक शोधकर्ता का कोई सम्बन्ध न तो व्यावहारिक (Practical) समस्याओं से है और न ही तात्कालिक सामाजिक नियोजन (immediate social planning) अथवा सामाजिक समस्याओं का हल करने वाले उपायों या सामाजिक सुधार से होता है ।

Created By Sign Doc

वह प्रशासकीय परिवर्तनों (administrative changes) और प्रशासकीय विधियों में होने वाले शुद्धिकरण से सम्बद्ध नहीं होता है। वह अपने को जीवन और कार्य, कुशलता और कल्याण के पूर्वस्थापित मानों द्वारा (Preestablished standards) द्वारा निर्देशित नहीं करता, और सामाजिक घटनाओं की उन्नत करने के उद्देश्य से इन मानों के सन्दर्भ में नापता भी नहीं है।" "सामाजिक शोधकर्ता की दृष्टि रची तो विशेष रूप से सामाजिक घटनाओं तथा सामान्य रूप से सामाजिक समूहों से सम्बद्ध सामाजिक प्रक्रियाओं (Process) तथा व्यवहार-प्रतिमानों (Patterns of behaviour) को तथा उनमें पाई जाने वाली समानताओं व असमानताओं को खोजने और विश्लेषण करने में होती है।" सामाजिक शोध के उद्देश्यों के किसी भी विवेचन में इस सत्य को याद रखना है।

Created By Sign Doc